प्रतिवेदन

डॉ. अम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, हिंदुस्तानी भाषा अकादमी एवं तिनका तिनका फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में बुधवार, 7 अक्टूबर 2026 को डॉ. अम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र, जनपथ, नई दिल्ली में **'मीडिया में हिंदी'** विषय पर एक महत्वपूर्ण संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में मीडिया, पत्रकारिता और हिंदी भाषा के वर्तमान स्वरूप, उसकी चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं पर गंभीर और सार्थक विमर्श हुआ।

संगोष्ठी में डॉ. अम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र के **निदेशक कर्नल आकाश पाटील**, हिंदुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक, तिनका तिनका फाउंडेशन की संस्थापिका, लेखिका, जेल सुधारक एवं मीडिया शिक्षक प्रो. (डॉ.) वर्तिका नंदा, डॉ. अभिषेक कुमार, सहायक आचार्य, लक्ष्मीबाई कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय तथा डॉ. अनिकेत जायसवाल, सहायक आचार्य, मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय मंचासीन रहे। संगोष्ठी में विभिन्न महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के बड़ी संख्या में विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों ने प्रत्यक्ष तथा ऑनलाइन माध्यम से सहभागिता की। संगोष्ठी की एक विशेष विशेषता यह रही कि इसमें प्रतिभागियों को पारंपरिक शोध-पत्र प्रस्तुतीकरण के साथ-साथ दो मिनट के वीडियो के माध्यम से भी अपनी बात रखने का अवसर दिया गया। जो विद्यार्थी व्यक्तिगत रूप से उपस्थित नहीं हो सके, उन्होंने अपने विचार रिकॉर्ड कर वीडियो के माध्यम से भेजे, जिन्हें संगोष्ठी के दौरान प्रदर्शित किया गया। इसके अतिरिक्त गूगल लिंक के माध्यम से देश के विभिन्न शहरों से प्रतिभागियों ने ऑनलाइन जुड़कर अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। इस प्रकार संगोष्ठी ने प्रत्यक्ष और डिजिटल, दोनों माध्यमों को एक साथ जोड़ते हुए व्यापक सहभागिता का स्वरूप ग्रहण किया।

डॉ. अम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र के निदेशक कर्नल आकाश पाटील ने अपने संबोधन में मीडिया और हिंदी से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों तथा प्रश्नों पर बात की। उन्होंने कहा कि मीडिया आज समाज के निर्माण और विचारों के प्रसार में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने इस प्रकार की कार्यशालाओं और परिचर्चाओं के आयोजन को केंद्र के लिए गौरव का विषय बताया।

हिंदुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक ने अपने वक्तव्य में मीडिया और पत्रकारिता के बीच के अंतर को विशेष रूप से रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता का मूल आधार तथ्यों की पड़ताल, उनकी सत्यता की जाँच और उसके बाद उनका जिम्मेदारीपूर्वक संप्रेषण है, जबकि मीडिया व्यापक अर्थ में उन विभिन्न माध्यमों का क्षेत्र है, जिनके जरिए सूचनाएँ और विचार समाज तक पहुँचते हैं। उन्होंने वर्तनी, व्याकरण, उच्चारण, अनुवाद और भाषा की मर्यादा से जुड़े प्रश्नों को गंभीरता से उठाया।

संगोष्ठी की प्रमुख वक्ता प्रो. (डॉ.) वर्तिका नंदा ने अपने सारगर्भित संबोधन में मीडिया की विकास-यात्रा को अत्यंत रोचक ढंग से प्रस्तुत किया। उन्होंने मनोरंजन-प्रधान टेलीविजन कार्यक्रमों से अपनी बात शुरू करते हुए उस दौर को याद किया, जब सीमित समय के समाचार प्रसारण हुआ करते थे। इसके बाद उन्होंने 24 घंटे के समाचार चैनलों के दौर और उसके साथ आए मीडिया के बढ़ते व्यावसायीकरण की चर्चा की। प्रो. नंदा ने विद्यार्थियों और शोधार्थियों से विशेष रूप से कहा कि उन्हें भाषा के प्रति सजग रहना चाहिए। उन्होंने मीडिया में प्रचलित ऐसे कई शब्द-प्रयोगों की ओर संकेत किया, जो भाषायी दृष्टि से उपयुक्त नहीं हैं, लेकिन लगातार इस्तेमाल के कारण आम बोलचाल में जगह बनाते जा रहे हैं। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि वे भाषा को केवल संचार का माध्यम न मानें, बल्कि उसकी गुणवत्ता, गरिमा और प्रभाव को भी समझें।

संगोष्ठी के दौरान विभिन्न महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों से आए विद्यार्थियों और शोधार्थियों ने 'मीडिया में हिंदी' से जुड़े विभिन्न उपविषयों पर अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। प्रत्यक्ष प्रस्तुतीकरण के साथ ऑनलाइन प्रतिभागियों ने भी अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। पूर्व रिकॉर्ड किए गए दो मिनट के वीडियो प्रस्तुतियों को भी कार्यक्रम में प्रदर्शित किया गया। इस नवाचारी व्यवस्था ने संगोष्ठी को अधिक व्यापक और सहभागी स्वरूप प्रदान किया। शोध-पत्र प्रस्तुतियों के बाद प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। कार्यक्रम के अंत में डॉ. स्वाति मिश्रा, एसोसिएट प्रोफेसर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया और सभी वक्ताओं, शोधार्थियों, विद्यार्थियों तथा सहयोगी संस्थाओं के प्रति आभार व्यक्त किया।


डॉ. अम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र
सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय
भारत सरकार
संगोष्ठी


श्री दुषाकर पाठक